

---

# Shri Ganesha Stuti Parasharakrita

पराशरकृता श्रीगणेशस्तुतिः

## Document Information

---

Text title : Shri Ganesha Stuti Parasharakrita

File name : gaNeshastutiHparAsharakRRitA.itx

Category : ganesha, mudgalapurANA, stuti

Location : doc\_ganesha

Proofread by : Yash Khasbage, Preeti Bhandare

Description/comments : mudgalapurANaM dvitIyaH khaNdaH | adhyAyaH 30 | 2.30 26-37||

Latest update : June 4, 2024

Send corrections to : sanskrit at cheerful dot c om

---

This text is prepared by volunteers and is to be used for personal study and research. The file is not to be copied or reposted without permission, for promotion of any website or individuals or for commercial purpose.

**Please help to maintain respect for volunteer spirit.**

---

Please note that proofreading is done using Devanagari version and other language/scripts are generated using **sanscript**.

---

June 5, 2024

*sanskritdocuments.org*

---

---

## Shri Ganesha Stuti Parasharakrita

---

### पराशरकृता श्रीगणेशस्तुतिः

---



॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

पराशर उवाच ।

नमस्ते गणवङ्गत्राय नराकाराय ते नमः ।

नरकुञ्जररुपाय गणेशाय नमो नमः ॥ २६ ॥

निर्गुणाय गुणधारादृषिणे परमात्मने ।

परात्पराय देवायानादिसिद्धाय ते नमः ॥ २७ ॥

अनन्ताननघारायानन्तपाण्यङ्घ्रिरुषिणे ।

अनन्तविभवायैव गकाराय च ते नमः ॥ २८ ॥

सर्वडीनाय देवाय मायाभ्यां वर्जिताय ते ।

सदा ब्रह्ममयायैव षाकाराय नमो नमः ॥ २९ ॥

तयोश्च स्वामिने तुभ्यं गणेशाय नमो नमः ।

स्वानन्दवासिने पूर्णभुक्तिमुक्तिप्रदाय ते ॥ ३० ॥

किं स्तौमि देवदेवेश वेदवेदान्तकादिभिः ।

सम्पादितं परं ब्रह्म त्वामतः प्रणमाम्यहम् ॥ ३१ ॥

यदि तुष्टोऽसि देवेश तदा पुत्रो भव प्रभो ।

आवयोर्गणनाथ त्वं तदा मे स्यात् स्थिरं मनः ॥ ३२ ॥

अस्माकं कुलदेवश्च त्वमेव गणनायक ।

ब्रह्मभावेन नित्यं त्वां भजामस्तत्र विद्वप ॥ ३३ ॥

पुत्रभावेन देवेश भजेयं संसृतौ गतः ।

संसारः सङ्कलस्तेन ब्रह्मरूपो भवेद्य मे ॥ ३४ ॥

श्रुत्वैवं वचनं तस्य पराशरमुनेरिदम् ।

तमुवाच गणधीशो भक्तं योगधरं परम् ॥ ३५ ॥

(इलश्रुतिः)

गणेश उवाच ।

त्वया यत्प्रार्थितं विप्र तत्सर्वं सङ्कलं भवेत् ।

तव पुत्रो भविष्यामि गजासुरवधाय य ॥ ३६ ॥

त्वया स्तोत्रं कृतं यच्च तत्सर्वेच्छितदं भवेत् ।

भुक्तिमुक्तिकरं तेषां पठतां शृण्वतां नृणाम् ॥ ३७ ॥


एति पराशरकृता श्रीगणेशस्तुतिः सम्पूर्णा ॥

- ॥ मुद्रलपुराणं द्वितीयः भाऽऽः । अध्यायः ३० । २.३० २६-३७ ॥

- .. mudgalapurANaM dvitIyaH khaNDaH . adhyAyaH 30 . 2.30 26-37..

Proofread by Yash Khasbage, Preeti Bhandare

---

——  
*Shri Ganesha Stuti Parasharakrita*  
pdf was typeset on June 5, 2024

Please send corrections to [sanskrit@cheerful.com](mailto:sanskrit@cheerful.com)

